अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) सबसे छोटे भव की स्थिति है-

(क) एक मुहूर्त्त (ख) 10 हजार वर्ष

(ग) 256 आवलिका (घ) 3 पल्योपम ( )

(b) आहारक शरीर के देशबंध की उत्कृष्ट स्थिति है-

(क) 1 समय (ख) अन्तर्मुहूर्त्त

(ग) 3 समय (घ) 256 आवलिका में 2 समय न्यून ( )

(c) आहारक शरीर प्रयोग बंध का अधिकारी नहीं है-

(क) ऋद्धि प्राप्त (ख) चतुर्दश पूर्वधर

(ग) दशपूर्वधर (घ) अप्रमत्त संयत ( )

(d) चक्रवती की सेना की शीत, ताप तथा वायु आदि से रक्षा करता है-

(क) छत्र रत्न (ख) चर्म रत्न

(ग) खड़ग रत्न (घ) मणि रत्न ( )

(e) 6 कर्म बंधक गुणस्थान है-

(क) 9वाँ (ख) तीसरा

(ग) 10वाँ (घ) 11वाँ ( )

(f) पार्श्वनाथ भगवान की परम्परा के श्रमण नहीं है-

(क) केशी श्रमण (ख) गौतम स्वामी

(ग) गांगेय अणगार (घ) उदक पेढाल पुत्र ( )

(g) छठे-सातवें गुणस्थान में अवस्थित परिणाम की जघन्य स्थिति है-

(क) 1 समय (ख) 7 समय

(ग) अन्तर्मुहूर्त्त (घ) देशोन क्रोड़पूर्व ( )

(h) अनुदीरक भी होता है-

(क) निर्ग्रन्थ (ख) स्नातक

(ग) कषाय कुशील (घ) पुलाक ( )

(i) पुलाक साधु पुलाकपने को छोड़ता हुआ जाता है-

(क) कषाय कुशील में (ख) प्रतिसेवना कुशील में

(ग) बकुश में (घ) स्नातक में ( )

(j) मनोभक्षी आहार पाया जाता है-

(क) नारकी में (ख) तिर्यंच में

(ग) मनुष्य में (घ) देवता में ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) गर्भज मनुष्य में वैक्रिय लब्धि के प्रयोग के प्रथम समय में भी जीव का मरण हो सकता है। ( )

(b) नारकी के देशबंध की उत्कृष्ट स्थिति 33 सागरोपम में 1 समय कम है। ( )

(c) आहारक लब्धि के प्रयोग काल में जीव का मरण नहीं होता। ( )

(d) मोहनीय कर्म का वेदन 9वें गुणस्थान तक होता है। ( )

(e) कर्म वेदते हुए बांधे के 453 भंग होते हैं। ( )

(f) परिहार विशुद्धि चारित्र वाले उत्तर गुण प्रतिसेवी ही होते हैं। ( )

(g) सामायिक संयत नियमा पूर्व प्रतिपन्न की अपेक्षा पृथक्त्व करोड़ होते हैं। ( )

(h) छेदोपस्थापनीय संयत का उत्कृष्ट परिमाण प्रथम तीर्थंकर के तीर्थ आसरी संभावित होता है। ( )

(i) एक समय में एक जीव के क्रोधादि चार में से एक कषाय का ही उदय रहता है। ( )

(j) पुलाक साधु 8 या 7 कर्मों का बंध करता है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	रजोरहण	(क) पलिभाग	.....
(b)	महाविदेह क्षेत्र	(ख) दर्शनोपयोग	.....
(c)	निस्सार धान्य कण	(ग) वेदन	.....
(d)	ग्रन्थ	(घ) स्वलिंग	.....
(e)	प्रतिक्रमण	(च) अहमिन्द्र	.....
(f)	सामानिक	(छ) व्रत	.....
(g)	अनाकार उपयोग	(ज) अनाहारक	.....
(h)	वर्धमान	(झ) पुलाक	.....
(i)	विपाकोदय	(य) मोह	.....
(j)	अपान्तराल गति	(र) अवस्थित	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं चक्रवर्ती से दुगुनी अवगाहना वाला होता हूँ। .....

(b) मुझसे निकला हुआ जीव पूरी 23 पदवियाँ प्राप्त कर सकता है। .....

(c) मैं पंचेन्द्रिय रत्न हूँ और महासौभाग्यशाली, कार्यदक्ष और अत्यन्त सुन्दर है। .....

(d) मेरे 25वें पद में कर्म बांधते हुए वेदने का अधिकार चलता है। .....

(e) मैं अबंधक गुणस्थान हूँ। .....

(f) मैं आठ कर्मों का नाश करता हूँ। .....

(g) मैं ऐसा संयत हूँ, जिसमें समुद्घात होता ही नहीं है। .....

(h) मुझमें आयुष्य, बल, शरीर, वर्णादि में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। .....

(i) मैं जीव की ज्ञान-दर्शनात्मक प्रवृत्ति हूँ। .....

(j) मैं त्वचा में रहे हुए छिद्रों से ग्रहण होता हूँ। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) पृथ्वीकाय का सकाय आसरी सर्वबंध का अन्तर लिखिए।

.....

.....

.....

(b) एकेन्द्रिय रत्नों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(c) मनुष्य में पायी जाने वाली पदवियों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(d) ज्ञानावरणीय कर्म को वेदते हुए समुच्चय जीव कितने कर्मों को वेदता है, भंग सहित लिखिए।

.....

.....

.....

(e) परिहार विशुद्धि चारित्र में श्रुत की मात्रा लिखिए।

.....

.....

.....

(f) यथाख्यात संयत में कितने परिणाम पाते हैं? उनकी स्थिति भी लिखिए।

.....

.....

.....

(g) छेदोपस्थापनीय संयत का उससम्पद्हान लिखिए।

.....

.....

.....

(h) सामायिक संयत का एक भव तथा अनेक भव आसरी आकर्ष लिखिए।

.....

.....

.....

(i) अच्छवी किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(j) कृतिकर्म कल्प को समझाइए।

.....

.....

.....

(k) वैक्रिय शरीर प्राप्ति के नौ कारणों में नवमाँ कारण लिखिए।

.....

.....

.....

(l) वैक्रिय शरीर के सर्वबन्धक, देशबन्धक और अबन्धक की अल्पबहुत्व लिखिए।

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए (कोई बारह): - **12x3=(36)**

(a) सयोगता और योग में अन्तर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) देव-नारकों में उत्तर वैक्रिय करने पर सर्वबंध नहीं मानने का कारण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) पृथ्वीकाय के देशबंध की जघन्य स्थिति कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) सेनापति रत्न का कार्य लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) मोहनीय कर्म को वेदता हुआ मनुष्य कितने कर्म बांधता है ? भंग भी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(f) पाँचों संयतों में कल्प द्वार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) परिहार विशुद्धि चारित्र के उत्कृष्ट अन्तर को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

(h) पारिहारिक और अनुपारिहारिक किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

(i) पुलाक के मरण को किस अपेक्षा से समझा जाता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(j) प्रतिसेवना कुशील का शेष नियंठों के साथ सन्निकर्ष लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(k) निर्ग्रन्थपना अनेक भव की अपेक्षा कितनी बार प्राप्त होता है और कैसे ?

.....

.....

.....

.....

.....

(l) स्नातक लोक के अनेक असंख्याता भागों मे किस अपेक्षा से होते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

(m) पूर्व प्रतिपन्न की अपेक्षा छहों नियंठों का परिमाण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....